पहले जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे पर बयानबाजी बंद हो

जम्मू-कश्मीर हमारे लिए एक राज्य कम समस्या ज्यादा है। एक ऐसी समस्या जो प्याज की मानिंद है, जिसके छिलके कभी खत्म नहीं होते। वैसे तो जम्मू-कश्मीर सालभर आमतौर पर गलत वजहों के कारण सुर्खियों में बना रहता है, लेकिन चुनाव के दौरान ये चर्चाएं चरम पर होती हैं। अब जम्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता महबूबा मुफ्ती ने यह कहकर सनसनी फैला दी है कि आप हमें संविधान के अनुच्छेद 370 हटाने की तारीख बताइए, हम जम्मू-कश्मीर के भारत से अलग होने की तारीख बता देंगे। गौरतलब है कि अनुच्छेद 370 के कारण जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा मिला हुआ है। असल में इस अनुच्छेद की व्याख्या बेहद दुरुह काम हो गया है। हर नेता अपनी पार्टी लाइन के मुताबिक इसकी व्याख्या करता नजर आता है। इसी वजह से इस मुद्दे पर दो धड़े साफ दिखाई देते हैं। एक कहता है कि यह अनुच्छेद तात्कालिक हालात (1947-48) में सही था, लेकिन अब इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन, दूसरे धड़े का कहना है कि यह एकमात्र संवैधानिक कड़ी है, जिससे भारत और जम्मू-कश्मीर आपस में जुड़े हैं। जिस दिन हम इस अनुच्छेद को अलग कर देंगे, उस दिन यह राज्य भी भारत से अलग हो जाएगा। कहा जाता है कि इसके हटते ही अलगाववादी जनमत संग्रह की मांग उठाएंगे और विवाद का अंतरराष्ट्रीयकरण करने की कोशिश करेंगे। उधर अनुच्छेद हटाने के पक्षधर कह रहे हैं कि पिछले 70 वर्षों में भारतीय संविधान के अनेक कानून और धाराएं वहां लागू हो चुकी हैं। संविधान के अनुच्छेद 356 के तहत वहां राष्ट्रपति शासन भी लगाया जा सकता है। तमाम संवैधानिक संस्थाओं जैसे सीएजी या चुनाव आयोग का राज्य में पूरा दखल है। वहां जनमत संग्रह हो ही नहीं सकता, क्योंकि पाकिस्तान ने 13 अगस्त 1948 के संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव की शर्तें मानी ही नहीं हैं। कुल-मिलाकर मामला बेहद उलझा हुआ है। लेकिन, इसे उलझाने के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार राजनेता हैं। इन नेताओं ने राजनीतिक सुविधा के मुताबिक इस अनुच्छेद की मनमानी व्याख्या की है। अब वक्त आ गया है कि जब दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय दिया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट इस मुद्दे पर सुनवाई के लिए पहले ही तैयार हो गया है। लेकिन, इस सबमें पहले ऐसे तमाम राजनीतिक बयानों पर रोक लगाया जाना नितांत आवश्यक है, जो सिर्फ राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए बेवजह दिए जाते हैं।

बीच राह में खड़े मतदाता की त्रासद दुविधा

संदर्भ... मोदी से मोहभंग और राहुल गांधी पर भरोसा न होने से उसके सामने वोट देने का विकल्प नहीं

गुरचरण दास
लेखक और स्तंभकार
gurcharandas@gmail.com

जब 2014 में मैंने मोदी को वोट दिया था तो मैंने अपने वामपंथी मित्र खो दिए थे। मैंने अपने दक्षिणपंथी मित्र तब गंवा दिए जब मैंने नोटबंदी, बहुसंख्यकों के प्रभुत्व की राजनीति करने और हमारे संस्थानों को कमजोर करने के लिए मोदी की आलोचना की। जब मेरे दोस्त ही नहीं बचे तो मैं समझ गया कि मैं सही जगह पहुंच गया हूं। आम चुनाव निकट आने के साथ मेरा मोहभंग हो गया है। अच्छे दिन तो नहीं आए पर राष्ट्रवाद आ गया और जिस भारत से मैं प्यार करता हूं,वह बदल रहा है। मैं मोदी भक्त और मोदी से नफरत करने वालों से घिरा हूं, दोनों को मैं कुछ अरुचिकर पाता हूं। लेकिन, मुझे पता ही नहीं है कि मैं किसे वोट दूं। मुझे राहुल गांधी पर भरोसा नहीं है और वंशवाद मुझे पसंद नहीं है। महागठबंधन से तो मुझे भीषण डर लगता है। यह अराजक गठजोड़ मोदी को हटाने के अलावा कोई पेशकश नहीं करता। मुझे सिर्फ यही सांत्वना है कि मैं अकेला नहीं हूं।

पांच साल पहले मैं ख़फा था। मंहगाई बहुत अधिक थी, आर्थिक वृद्धि दर घट रही थी, घोर भ्रष्टाचार था और यूपीए सरकार पंगु बन गई थी। मैं चिंतित था कि भारत फिर मौका न गंवा दे। इसके पास युवा आबादी होने का सीमित अवसर था। यदि कामकाजी युवा आबादी को रोजगार दिया जा सके तो देश को बोनस जीडीपी वृद्धि मिल सकती थी। मुझे लगा कि अगले नेता के लिए यह नैतिक अनिवार्यता है कि वे जॉब निर्मित करने की परिस्थितियां बनाएं। अन्यथा एक दर्जन वर्षों में यह अवसर गायब हो जाएगा। मैंने निर्णय लिया कि मोदी ही हमारी श्रेष्ठतम उम्मीद है। यह आसान फैसला नहीं था। हिंदू राष्ट्रवाद ने मुझे कभी आकर्षित नहीं किया। मैं मोदी की तानाशाही प्रवृत्तियों से भी वाकिफ था और धर्मनिरपेक्षता के लिए जोखिम से भी। मैंने गुजरात 2002 के दाग की अनदेखी नहीं की लेकिन, मेरी दलील यह थी कि यदि भारत जॉब निर्मित करने में नाकाम रहा तो हम एक और पीढ़ी गंवा देंगे। वर्ष 1050 से 1990 के बीच दो पीढ़ियां गंवा देना ही कोई कम नुकसान नहीं था। मुझे लगा था कि भारत के लोकतांत्रिक संस्थान तानाशाही शासन पर लगाम लगा देंगे और मोदी ने भी सबक सीखा है, क्योंकि 2002 के बाद से गुजरात शांत था।

पांच साल बाद मैं हताश हूं, क्योंकि वादे के मुताबिक नौकरियां कहीं नज़र ही नहीं आ रही हैं और किसानों में भी तकलीफ में हैं। मोदी बदलाव लाने वाले नेता नहीं निकले। मुझे उम्मीद थी कि वे ऐतिहासिक बहुमत का फायदा उठाकर तेजी से सुधार लाएंगे। यदि उन्होंने कृषि उपज के वितरण में सुधार लागू किए होते तो खेती के संकट को कई अंशों में टाला जा सकता था। वे बैंकिंग के संकट का इस्तेमाल सबसे खराब सरकारी बैंकों के निजीकरण में कर सकते थे। फिर भी मुझे खुशी है कि अर्थव्यवस्था को काफी हद तक ठीक ढंग से संभाल लिया गया है। वित्तीय घाटा कम हुआ है, महंगाई रिकॉर्ड 2-3 फीसदी तक गिर गई है और बुनियादी ढांचे में सुधार हो रहा है। दिवालिया कानून, जीएसटी और डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर जैसे उनके मुख्य सुधारों से आगे के वर्षों में अत्यधिक फायदा मिलेगा। नोटबंदी विनाशकारी थी पर जीएसटी गेम चेंजर साबित होगा। दिवालिया कानून संपत्तियों का उत्पादक इस्तेमाल सुनिश्चित करेगा। रिसावग्रस्त सरकारी सब्सिडी का धीरे-धीरे नकद हस्तांतरण में बदलाव हो रहा है। नागरिक व सरकार के बीच ऑनलाइन लेन-देन से बिज़नेस करने की आसानी की विश्व बैंक की रैंकिंग में भारत ने 30 स्थानों की उछाल लगाई है। देश बेहतर ढंग से काम करे, मोदी ने इसकी शुरुआत कर दी है। इन उपलब्धियों के बावजूद मैं भाजपा की बहुसंख्यकवादी राजनीति और हिंदू राष्ट्रवाद के प्रति इसके जुनून से नाखुश हूं। मोदी विभाजनकारी रहे हैं और अल्पसंख्यक असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। देश के संस्थान कमजोर हुए हैं जैसे अब मैं जीडीपी और नौकरियों के आंकड़ों पर भरोसा नहीं करता।

मोदी नतीजे देने में नाकाम क्यों रहें? यह सरकार की कमजोर क्षमता और सिविल सेवा पर जरूरत से ज्यादा निर्भर रहने का परिणाम है। उन्होंने बहुत सारे कार्यक्रमों की घोषणा कर दी और इसमें रोजगार जैसे अहम मुद्दे खो गए। उत्पादक रोजगार निर्मित करने के लिए भारत को अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होना पड़ेगा। यह ऐसा जटिल काम है कि वह आईएएस अधिकारियों पर नहीं छोड़ा जा सकता है, जो निर्यात को लेकर पुराने निराशावाद से पीड़ित हैं। निराशावादियों को याद दिलाना होगा कि वैश्विक व्यापार 16 लाख करोड़ डॉलर है और इसमें भारत का हिस्सा सिर्फ 1.7 फीसदी है। यदि यह 2.5 तक बढ़ जाए तो अच्छे दिन आ जाएंगे। चीन से विदा हो रही नौकरियां वियतनाम नहीं, भारत में आनी चाहिए। जब मोदी ने 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' का वादा किया, तो मुझे अपेक्षा थी कि वे सरकारी ढांचे में सुधार लाने का कठिन काम शुरू करेंगे। न्याय पाने में 12 साल क्यों लगते हैं? आईएएस में आने वाले किसी भी प्रतिभाशाली युवा को इस तथ्य से ज्यादा कोई बात हताश नहीं करती कि अच्छा प्रदर्शन करने वाले और खराब प्रदर्शन करने वाले को साथ में पदोन्नति मिलती है। सरकार की कमजोरी, जरूरत से ज्यादा जवाबदेही से और भी बढ़ जाती है, क्योंकि देश हमेशा चुनाव के दौर में ही रहता है। मोदी ने एक साथ चुनाव कराने की हिमायत की पर विपक्ष उन्हें समर्थन देने में नाकाम रहा।

ऐसे में मैं 2019 में किसे वोट दूंगा? सच तो यह है कि मैं नहीं जानता। अब तक मोदी सर्वाधिक लोकप्रिय नेता बने हुए हैं। इसकी उम्मीद कम है कि कांग्रेस और इसके सहयोगी एकजुट होकर प्रभारी सरकार का स्वरूप लेंगे। मैं आंकड़ों में कम जाने वाले और अधिक धर्मनिरपेक्ष मोदी या अधिक अनुभवी, दृढ़प्रतिज्ञ, सुधारों के भूखे राहुल गांधी को तरजीह दूंगा। लेकिन, यह काल्पनिक ख्वाहिश है। इन दोनों में, मैं जानता हूं कि मोदी कहीं अधिक आर्थिक व शासन संबंधी सुधार कर पाएंगे लेकिन, क्या मैं इसके लिए सामाजिक वैमनस्यता की बहुत बड़ी कीमत चुकाने को तैयार हूं? राहुल गांधी के मातहत देश अधिक धर्मनिरपेक्ष होगा पर उनकी रुचि जॉब निर्मित करने में नहीं, सिर्फ खैरात बांटने में है। क्या मैं एक और पीढ़ी की बलि चढ़ाने को तैयार हूं जैसे नेहरू व इंदिरा गांधी के लाइसेंस राज में चढ़ा दी गई थी?

मध्यमार्गी होने के कारण मेरा रुझान जो तर्कसंगत और व्यावहारिक है उसके लिए वोट देने की ओर होता है। मुझे लगता है कि मेरी तरह कई भारतीय मतदाता बीच राह में खड़े होने की त्रासद दुविधा में फंस गए हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

संस्कारों में है मन को रोकने की ताकत

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

दुनिया में दो चीजें बड़ी तेजी से भागती हैं- समय और मन। वक्त को तो पकड़ा नहीं जा सकता। वह आएगा भी अपने ढंग से और जाएगा भी अपने ही तरीके से, लेकिन मन की गति को रोका जा सकता है। जिसका मन गतिशील है, वह अशांत और जिसका मन रुका हुआ है, वह शांत होगा। मन को रोकने की ताकत सिर्फ संस्कारों में है। संस्कारों को यदि समझना है तो जीवन की कुछ गतिविधियां इनसे जोड़ लीजिए। जो परिणाम मिलेगा, उससे आप समझ जाएंगे संस्कार क्या होते हैं? 6 अप्रैल को हिंदू अपना नववर्ष मनाएंगे और उसकी पूर्व संध्या पर आज शाम 6:30 बजे संस्कार टीवी चैनल पर कोलकाता में होने वाले खास कार्यक्रम 'एक शाम संस्कारों के नाम' का सीधा प्रसारण होगा। देश-दुनिया के सवा करोड़ से अधिक लोग एक साथ एक ही समय श्री हनुमान चालीसा का महापाठ करेंगे। वनबंधु परिषद, एकल विद्यालय ने इस आयोजन को इसलिए हाथ में लिया है कि जब नववर्ष मनाया जाए तो मनुष्य को भौतिक उपलब्धियों के साथ शांति जरूर मिले। आज शिक्षा अशांति और शोषण का कारण बनती जा रही है, क्योंकि कहीं न कहीं शिक्षा और संस्कार में दूरी हो गई है। यह कार्यक्रम संस्कार और शिक्षा में सामिप्य लाने के लिए है। जैसे ही संस्कार शिक्षा से जुड़ेंगे, परिणाम मिलेगा। संस्कार टीवी के माध्यम से आज की संध्या से अवश्य जुड़िए। हमारे बच्चों के जीवन में शिक्षा के साथ यदि संस्कार आ जाएं तो वे मानव बम बनने से बचे रहेंगे..।

जीने की राह कॉलम पं. विजयशंकर मेहता जी की आवाज में मोबाइल पर सुनने के लिए 9190000072 **पर मिस्ड कॉल करें**

पुरुष ना सुनने की आदत डालें तो शायद हिंसा कम हो सकती है

अस्तित्व

यह कल सुबह 5 बजे की घटना है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा में तैनात महिला कांस्टेबल नीलम अपनी ड्यूटी खत्म करके घर लौट रही थी। वो सड़क किनारे खड़ी ऑटो का इंतजार कर रही थी। रास्ते में कुछ लड़के आए और एसिड फेंककर चले गए। बाद में पता चला, इसके पीछे उस लड़के का हाथ है, जो नीलम से शादी करना चाहता था। उसने इनकार किया तो एसिड फेंक दिया। कुछ ऐसी ही कहानी है मेघना गुलजार की आने वाली फिल्म 'छपाक' की, जिसमें दीपिका पादुकोण ने एसिड अटैक सर्वाइवर लक्ष्मी की भूमिका निभाई है। लक्ष्मी 15 साल की थी, जब 32 साल का एक आदमी उससे शादी करना चाहता था। लक्ष्मी ने इनकार किया तो उसने एसिड से लक्ष्मी का पूरा चेहरा और शरीर जला दिया। तीन महीने बाद झुलसा चेहरा और दिल में दर्द लिए अस्पताल से लौटीं। ऐसे ही एक और लड़की थी। उसने पति से तलाक मांगा तो पति ने उसे एसिड से जला दिया। वहीं एक पति ने पत्नी को एसिड से इसलिए जलाया, क्योंकि उसे शक था कि पत्नी का अफेयर है। कुछ साल पहले जेएनयू में एक लड़के ने अपनी दोस्त पर क्लास में कुल्हाड़ी से वार किया क्योंकि लड़का उससे प्यार करता था, लेकिन लड़की नहीं।

आखिर वह कौन-सी बात है, जो इन सारी घटनाओं में कॉमन है। लड़का शादी करना चाहे तो लड़की को इनकार नहीं करना चाहिए। पति चाहे पीटे, चाहे अत्याचार करे, पत्नी को तलाक नहीं लेना चाहिए। लड़का कहे, आय लव यू तो लड़की को पलटकर नहीं कहना चाहिए, लेकिन मैं तो तुमसे प्यार नहीं करती। लड़का जो कहे, लड़की को बात माननी चाहिए। हां में हां मिलाना चाहिए और ना में ना। लड़के के अहम को चोट नहीं पहुंचानी चाहिए, क्योंकि उसके अहम पर चोट लगी तो वो बदला लेगा और किसी भी हद तक जाकर लेगा। एसिड अटैक से लेकर स्त्रियों पर हिंसक हमले की ये सारी घटनाएं सिर्फ क्राइम की घटनाएं भर नहीं हैं। किसी एक क्षण में आए गुस्से से हुई हिंसा नहीं है। ये घटनाएं समाज में मौजूद स्त्री-पुरुष संबंधों का आईना हैं। इसका यह मतलब कतई नहीं कि सभी पुरुष एक से हैं और अपराधी ही हैं। यह हिंसा से ज्यादा अपना अधिकार जमाने, अपना पौरुष दिखाने और उसकी बात न मानने वाले इंसान को सबक सिखाने की घटना है। पुरुष स्त्री को सबक सिखाना चाहता है क्योंकि वह उसे बराबर नहीं मानता। पुरुष खुद को ताकतवर समझता है, स्त्री को अपनी संपत्ति समझता है, उस पर अधिकार चाहता है, उसके अहम को ना सुनने की आदत नहीं। वह यह नहीं समझता कि स्त्री उससे अलग एक स्वतंत्र मनुष्य हैं, स्वतंत्र दिल-दिमाग है, उसकी अपनी सोच और फैसला हो सकता है। उसे ना कहने का हक है और उसकी ना का सम्मान होना चाहिए। कुछ मर्दों को ये बात समझ में नहीं आती क्योंकि पीढ़ियों से चले आ रहे संस्कारों और परवरिश ने उन्हें यही सिखाया है कि वो श्रेष्ठ हैं। वो सर्वशक्तिमान हैं। वो प्रस्ताव रखे तो लड़की को मानना ही होगा। लड़की इनकार करेगी तो एसिड से जलेगी, कुल्हाड़ी से कटेगी। इन घटनाओं को मामूली हिंसा की घटनाओं से कहीं ज्यादा देखने-समझने की जरूरत है। ताकि एक ऐसा समाज बना सकें, जहां किसी लड़के को ये न सिखाया जाए कि लड़की उसकी प्रॉपर्टी है।

परदे के पीछे

जंगल और जानवर वाली फिल्मों में मानव किरदार

विद्युत जामवाल अभिनीत फिल्म 'जंगली' दर्शक द्वारा पसंद की जा रही है। इस फिल्म का केंद्र एक हाथी है। राजेश खन्ना ने अपने शिखर दिनों में चिनप्पा देवर की फिल्म 'हाथी मेरा साथी' अभिनीत की थी। चिनप्पा देवर की दूसरी फिल्म 'गाय और गोरी' में जया भादुड़ी ने अभिनय किया था। चिनप्पा देवर जानवरों को प्रशिक्षित करने का व्यवसाय करते थे। देवर महोदय ईश्वर को अपने कारोबार में बराबरी का भागीदार मानते थे। मुनाफे का आधा भाग अपने कुल देवता के मंदिर को देते थे।

जयप्रकाश चौकसे
फिल्म समीक्षक
jpchoukse@dbcorp.in

वर्ष 1985 में राज कपूर की 'राम तेरी गंगा मैली' और केसी बोकाडिया की कुत्ते पर केंद्रित फिल्म 'तेरी मेहरबानियां' का प्रदर्शन हुआ और वितरक ने कहा कि गंगा के तट पर कुत्ता दौड़ रहा है परंतु गंगा 2550 मील का सफर तय करती है। कुत्ते के लिए इतना दौड़ा संभव नहीं था। एक फिल्म में अरुणा ईरानी अभिनीत पात्र का शिशु जन्म के बाद ही मर जाता है। अपने पास आते सपोले को वह अपना दूध पिलाती है। आगे जाकर मुसीबत के समय सांप अपनी दूध पिलाने वाली मां की सहायता करता है। फिल्म का नाम था 'दूध का कर्ज'। ज्ञातव्य है कि अमेरिका में 'स्टूडियो एनिमल' नामक संस्था है और वह फिल्मकार की आवश्यकता के अनुरूप जानवर प्रशिक्षित करके भेजती है। कुछ वर्ष पूर्व जानवरों से प्रेम करने वाले मंत्री ने सेन्सर बोर्ड को आदेश दिया था कि वे निगरानी रखें कि फिल्मकार शूटिंग के समय जानवर को कष्ट नहीं दें। सेन्सर का एक सदस्य शूटिंग में मौजूद रहता है और फिल्म के प्रारंभ में डिसक्लेमर देना होता है कि शूटिंग के समय जानवर को कष्ट नहीं दिया गया है। यहां तक कि यथार्थवादी फिल्म में भी काल्पनिक होने का डिसक्लेमर देना पड़ता है। खाकसार ने तो प्रवेश द्वार पर ही लिख दिया है कि इस घर में रहने वाले सभी पात्र काल्पनिक है।

आज फिल्म टेक्नोलॉजी इतनी विकसित हो चुकी है कि जानवरों के दृश्य ग्राफिक्स द्वारा बनाए जाते हैं और जानवर की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। टारजन किंवदंती बार-बार फिल्माई गई है। दुर्घटनावश एक बालक जंगल में अकेला रह जाता है। वह उनकी भाषा भी समझ लेता है परंतु मनुष्य की भाषा उसे नहीं आती। कुछ वर्ष पश्चात एक दल जंगल आता है, जिसकी एक सदस्या से टारजन को प्रेम हो जाता है। अपनी प्रेमिका की संगत में वह भाषा सीखने लगता है। इसी तरह वनमानुष केंद्रित 'किंगकांग' भी कई बार फिल्माई गई है। यह भी एक प्रेम-कथा है। अपनी प्रेमिका के वियोग में वनमानुष चीख पड़ता है। फिल्म में दिखाया है कि जंगल से विशालकाय वनमानुष को पानी के जहाज के तलघर में रखकर लंदन लाया जा रहा है, जहां टिकिट लगाकर उसका प्रदर्शन किया जाएगा। एक दृश्य में नायिका का लाल रंग का स्कार्फ हवा के कारण तलघर में बंद किंगकांग के चेहरे पर गिरता है और उस वियोगी का दर्द किसी कवि को प्रेरित कर सकता है। अमेरिकन फिल्म 'इरमालाडूस' से प्रेरणा लेकर शम्मी कपूर ने संजीव कुमार व जीनत अमान अभिनीत फिल्म 'मनोरंजन' बनाई थी। पुलिस हवलदार को तवायफ से प्रेम हो जाता है। अपने सरकारी समय में प्रेम करने के अपराध में उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। वह जीविका कमाने के लिए पुलिस द्वारा अपने कुत्तों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में काम करता है। उसमें कुत्ते शिकारी की तरह उसका पीछा करते हैं। जब उसकी प्रेमिका को यह बात मालूम पड़ती है तो वह उसे फटकार लगाती है। संवाद हैं 'क्या तवायफ की बिरादरी में मेरा नाम बदनाम करोगे की एक अदद प्रेमी भी पाल नहीं सकी।' बारमैन शम्मी कपूर की सलाह पर संजीव कुमार एक नवाब का वेश धारण करके प्रेमिका के कोठे पर जाता है। शम्मी कपूर पूछते हैं...'क्या मुगलों के बारे में उसे कोई जानकारी है? उसका जवाब है क्या बात करते हैं मैंने सारी उम्र ईरानी रेस्तरां में मुगलई खाना खाया है।' राहुल देव बर्मन ने माधुर्य रचा था। एक गीत के बोल थे 'कितना प्यारा गीत है यह गोयाकि चुनांचे' राज कपूर के 'मेरा नाम जोकर' में रूसी कलाकार आमंत्रित किए गए थे। फिल्म में नीरज रचित गीत के बोल थे 'ए भाई जरा देखकर चलो.... जानवर आदमी से ज्यादा वफादार हैं और आदमी माल जिसका खाता है, प्यार जिससे पाता है, उसके ही सीने में भोंकता है कटार।'

वेब भास्कर

फोटोग्राफी... जमीन के 300 मीटर नीचे स्थित है मेक्सिको की जायंट क्रिस्टल केव, यहां मिल चुका है 550 क्विंटल का क्रिस्टल

यह फोटो मेक्सिको के जायंट क्रिस्टल केव की है। यह गुफा जमीन से 300 मीटर नीचे है। इसके मुख्य चेंबर में सेलेनाइट के बड़े-बड़े प्राकृतिक क्रिस्टल मौजूद हैं। यहां पर मिला अब तक का सबसे बड़ा क्रिस्टल 12 मीटर लंबा और चार मीटर चौड़ा है। इसका वजन 550 क्विंटल है। इस गुफा का तापमान 58 डिग्री सेल्सियस रहता है और यहां पर 90 से 99 फीसदी आर्द्रता रहती है। सुरक्षा उपकरणों के बिना यहां पर एक बार में 10 मिनट तक ही रुका जा सकता है। इस गुफा को इलोय व जेवियर नाम के दो भाइयों ने खोजा था।

• travelandleisure.com

टॉप ऑन वेब • reddit

पर्यटकों के लिए अस्थायी तौर पर बंद होगा कोमोडो द्वीप

पिछले दिनों छिपकली की खाल के तस्करों की गिरफ्तारी के बाद इंडोनेशिया के प्रसिद्ध कोमाडो द्वीप को अगले साल जनवरी से अस्थायी तौर पर पर्यटकों के लिए बंद करने का फैसला किया गया है। यह द्वीप कोमोडो ड्रैगन का घर माना जाता है।

इंडोनेशिया के टेंपो अखबार के मुताबिक सरकार ने इसे बंद करने की तिथि तो तय कर दी है, लेकिन इसे दोबारा खोलने की तिथि नहीं बताई है। पार्क को बंद करने के बाद सरकार देखेगी कि कोमोडो ड्रैगन व यहां पाई जाने वाली अन्य छिपकलियों के लिए भोजन की चेन काम कर रही है या नहीं। इसके अलावा यहां मिलने वाली विभिन्न पादप प्रजातियों के संरक्षण के उपाय भी किए जाएंगे। अधिकारियों को उम्मीद है कि बंदी से यहां कोमोडो ड्रैगन की संख्या बढ़ाने में मदद मिलेगी। पिछले दिनो पुलिस ने यहां पर स्मगलरों

70,894

ट्रेंडिंग प्वाइंट्स और 96 प्रतिशत अपवोट्स के साथ यह पोस्ट शीर्ष पर है। इस पर 2607 कमेंट्स भी किए गए हैं

का एक बड़ा गैंग पकड़ा था। उसके पास से 41 कोमोडो ड्रैगन बरामद किए गए थे। इनमें से वे हरेक को करीब 24 लाख रुपए में बेच रहे थे। ब्लैक मार्केट में कोमोडो ड्रैगन की भारी मांग है।

कोमोडो ड्रैगन पृथ्वी पर मौजूद छिपकलियों की सबसे बड़ी प्रजाति है। वे 10 फीट तक लंबी होती हैं और उनका वजन 80 किलो तक पहुंच जाता है। इनकी लार में जहर होता है। अब दुनिया में इस तरह की सिर्फ 6000 छिपकलियां ही बची हैं और ये इसी पार्क में पाई जाती हैं।

मैनेजमेंट फंडा

'कलंक' किसी शारीरिक प्रहार से ज्यादा घातक!

फिल्म '2 स्टेट्स' बनाने वाले अभिषेक वर्मन की नई फिल्म 'कलंक' का ट्रेलर बुधवार को सामने आया। 17 अप्रैल को रिलीज होने वाली इस फिल्म में माधुरी दीक्षित, संजय दत्त, वरुण धवन, आलिया भट्ट, सोनाक्षी सिन्हा, आदित्य राय कपूर और कुणाल खेमू मुख्य भूमिकाओं में हैं। ये फिल्म सिने प्रेमियों को आजादी से पहले 1940 के दशक में ले जाएगी और इन किरदारों की जिंदगी से रूबरू होने का मौका देगी। इस फिल्म के जिक्र से मेरे दिमाग में वो दो कहानियां जुड़ने लगीं जो बुधवार को ही मेरे दिमाग में कौंधी थीं। ये दोनों कहानियां कुछ ऐसी हैं:

एन. रघुरामन
मैनेजमेंट गुरु
raghu@dbcorp.in

कहानी 1: 44 साल के मिलिंद पेंडनेकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और एक मल्टीनेशनल कम्पनी के वाइस प्रेसीडेंट हैं। बीते 23 मार्च को उन्होंने पुणे में गृह-प्रवेश कार्यक्रम का आयोजन किया था। उन्होंने आयोजन में अपनी बिल्डिंग के कॉरिडोर का इस्तेमाल खाना बनवाने के लिए किया, हालांकि इससे पहले उन्होंने पड़ोसियों की अनुमति ले ली थी। लेकिन, एक नए रहवासी के तौर पर उन्हें सोसायटी के नियम पता नहीं थे। वे आग जैसे हादसे को रोकने के लिए बनाए गए नियमों से वे परिचित नहीं थे। आयोजन के बाद सोसायटी ने उन्हें ऐसा करने पर नोटिस दिया और उन्होंने इसके लिए माफी भी मांगी। लेकिन, कुछ सोसायटी के कुछ सदस्यों का कहना था कि मिलिंद ने दूसरों की जिंदगी खतरे में डाली और 50,000 रुपए का जुर्माना लगा दिया।

कमेटी इसके बाद भी नहीं मानी और सदस्यों ने इस हाई-फाई सोसायटी के हर कोने में एक नोटिस चस्पा कर दिया, जिसमें कुछ ऐसा लिखा था 'मिलिंद नाम के इस मकान मालिक का आचरण बेहद गैर-जिम्मेदाराना है... वगैरह, वगैरह।' इसके बाद मिलिंद के बच्चों को दूसरे बच्चे यह कहकर चिढ़ाने लगे, 'तेरे पापा ने क्या कांड किया है।' इसके बाद मिलिंद और उनका पूरा परिवार परेशान रहने लगा, क्योंकि उन पर एक 'कलंक' लगाया जा रहा था और मिलिंद ने कुछ दिन तो घर से निकलना बंद कर दिया था। इस नोटिस ने कुछ अच्छे लोगों की बेचैनी बढ़ाई और करीब 40 लोगों ने मिलिंद के साथ हुए अपमानजनक व्यवहार के खिलाफ सिग्नेचर कैंपेन चलाया। यह भी बात थी कि परिसर के कॉरिडोर में मिलिंद से पहले भी कई लोगों ने आयोजन किए थे। इसी बुधवार को वे पुलिस शिकायत दर्ज करने के लिए मजबूर हुए।

कहानी 2: अब तक हम लोग यही सुनते आए हैं कि परीक्षा के दौरान कोई छात्र नकल करते पकड़ा जाए तो परीक्षक सब कुछ छोड़ सबसे पहले उसे लगभग दबोचते हुए कक्षा से बाहर कर देते हैं, फिर सजा देते हैं और प्रिंसिपल व उसके माता-पिता को तुरंत खबर करते हैं.... ऐसे वाकयों का पूरी कक्षा पर असर पड़ता है और खासतौर पर पकड़ा जाने वाला छात्र शर्मिंदा महसूस करता है, क्योंकि उसके चरित्र पर धब्बा (कलंक) लग चुका होता है!

लेकिन, अब जून से शुरू होने वाले नए अकादमिक वर्ष में सीबीएसई की मंशा है कि नकल करते हुए पकड़े जाने के ऐसे मामलों में परीक्षक-शिक्षक मामले को बहुत ज्यादा तूल देने की बजाय ईमानदारी व निष्ठा के साथ सकारात्मक रवैया अपनाए। सीबीएसई ने इस संबंध में 'सत्यनिष्ठा और नैतिकता (इंटेग्रिटी एंड एथिक्स)' नामक एक नियमावली भी बनाई है, और दो दिन की वर्कशॉप में शिक्षकों को यह सिखाया गया है कि छात्रों में नैतिकता और सत्यनिष्ठा जैसे अच्छे गुण कैसे विकसित किए जाएं। सरल शब्दों में कहें तो, सीबीएसई प्रबंधन चाहता है कि सहानुभूति, ईमानदारी, सच्चाई और क्षमा जैसे शब्दों का इस्तेमाल सिर्फ कक्षाओं में नहीं, बल्कि सच्ची मिसाल बनाने में किया जाए। इसलिए अब कई सीबीएसई शिक्षक नैतिक विज्ञान की कक्षाओं के माध्यम से ऐसे गुण विकसित करने के गुर सीखेंगे ताकि रोजमर्रा की जिंदगी के नैतिक संघर्षों से निपटने के लिए साधन जुटा सकें।

फंडा यह है कि हमें एक समाज के रूप में करुणा और सहानुभूति को स्थापित करना होगा ताकि बच्चे 'कलंक' (शर्म) से मुक्त जीवन की ओर अग्रसर हो सकें।

मैनेजमेंट फंडा एन. रघुरामन की आवाज में मोबाइल पर सुनने के लिए 9190000071 **पर मिस्ड कॉल करें**